ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 3.4
IJAR 2014; 1(1): 491-492
www.allresearchjournal.com
Received: 01-12-2014
Accepted: 20-12-2014

डॉ. सुशील निम्बार्क
सह आचार्य चित्रकला, राज मीरा कन्या महाविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान, भारत

Corresponding Author:
डॉ. सुशील निम्बार्क
सह आचार्य चित्रकला, राज मीरा कन्या महाविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान, भारत

बून्दी चित्र शैली में अभिव्यक्त जन–जीवन

डॉ. सुशील निम्बार्क

प्रस्तावनाः

भारतीय कला इतिहास के जब क्रमबद्धता के अध्ययन करते है तो राजस्थान लघु चित्र शैली का महत्वपूर्ण स्थान ऐसे है, कि इसके बिना कला इतिहास को जानने की सम्पूर्णता संभव ही नहीं है। इतिहास की पुस्तकों में अक्सर इस शैली को राज दरबारी शैली के रूप में भी प्रस्तावित किया गया है। लेकिन मेरा अन्वेषण बताता है कि यह केवल दरबारी विषयों तक ही सीमित नहीं थी। बल्कि जन सामान्य के लोगों व विषयों को भी तत्कालिन चितरो व राजाओं ने राजस्थानी शैली में स्थान दिया था। इस आलेख में इस विषय पर तत्व मीमासांत्मक विवेचन प्रस्तुत है।

इतिहास का अध्ययन बताता है कि राजस्थानी चित्रकला के विकास और उन्नयन में प्रदेश की रियासतों के राजा–महाराजाओ का विशेष सहयोग रहा। ये अपने वृहद् शासन काल में साहित्य, संगीत, और कला (चित्र व मूर्ति) के अत्यन्त प्रेमी व कला रसिक थे तथा इन कलाओं की उन्नति के लिए राज दरबार में कलाकारो, साहित्यकारों को संरक्षण देते थे और उन्हें अपने–अपने रचना क्षेत्र में नयी–नयी कथा रचनाओं के लिए प्रोत्साहित करते इसके लिए उन्हें सम्मान भी प्रदान करते थे।

प्रत्येक रियासत में कला की प्रगति के लिए विभाग और प्रशिक्षण केन्द्र भी खोले गये थे उदाहरण के तौर पर संगीत को लेकर उदयपुर महल का संगीत प्रकाश और चित्रकला को लेकर जयपुर में सूरतखना उदयपुर में चितारों की ओवरी, बून्दी में चित्रशाला नाम से अलग से चित्र रचना के लिए स्थान निर्धारित था। जहाँ चित्रकार एक साथ बैठकर चित्रण कार्य किया करते थे। राजाओं के संरक्षक के कारण ही अधिकांशतः राजस्थानी चित्रो में सामन्ती दरबारी विषयों के अधिक चित्रों का निर्माण हुआ था। यहाँ राजस्थानी की उपशैली, बून्दी शैली के प्राप्त चित्र में सामान्य घरेलू जन–जीवन से सम्बन्धित विषय महल की भित्तियो पर बने चित्रो से दृष्टिगत होते है। एक चित्र में एक बाजार का दृश्य अंकित किया गया है जिसमें विचरण करते लोग, दूकानदार, खरीददार सभी सामान्य जन–जीवन से सम्बन्धित है। सामान्य व्यक्तियों को विषय रूप में चित्रित किया गया है। सवाल उठता है कि यदि उस काल में चितेरे राजाओं के राज्याश्रम में ही काय करते तो सामान्य लोक जीवन के विषयों को किस प्रकार चित्रों में उकेर पाये ?

इस सन्दर्भ में यह कहा जा सकता है कि यद्यपि यह सत्य है कि बुन्दी शैली के चित्रकार राजस्थान के विभिन्न रियासतों के राजा–महाराजाओं की राज्याश्रम में रह रहे थे और उन्होंने अपनी कला–कौशल से बुन्दी शैली को उन्नति के शिखर तक पहुँचाया था, तथा अपने आश्रयदाता के अनुकूल मनोनुकूल कार्य करते हुए भी अपनी मनचाही चित्रकारिता के क्षेत्र में स्वतन्त्रत व्यक्तित्व के धनी थे। यही कारण है कि बून्दी के चित्रकारों ने राज्याश्रय के अधीन निर्मित चित्रकला में भी ऐसे अनेक विषयों का निर्माण किया जो आमजन जीवन की जीती–जागती तस्वीर थी।

जन–जीवन के चित्रण में बून्दी के चितारों की गहन रूचि से प्रभावित होकर कलामर्मज्ञ इस निष्कर्ष पर आते दिखाई देते है कि ये मानते है कि बून्दी शैली के कलाकार दरबारी न होकर जन साधारण को महत्वपूर्ण मानते थे तथा राजस्थान के कलाकार को राजा–महाराजा के सम्मान की आवश्यकता नही वे अपनी ख्याति का कारण अपनी कलात्मक सेवा को ही मानते थे।

1. चित्र कृतियों की स्वतन्त्रत रचना की पृष्टभूमि में उनका मानना यह भी रहा कि चित्रण में तो राजा–महाराजाओं की विशेष इच्छा या कामना रहती थी। जब ऐसी राज आज्ञाओं से मुक्ति पाकर ही चित्रकार अपनी स्वतन्त्र रचना पर ध्यान देते है।
2. यही कारण है कि उनके चित्र केवल महाराजाओं के शोक को पूरा नही करते बल्कि उनके चित्रो में मालण, सीकलीगर, बजाज, सुनार, हलवाई आदि नजर आते है।

उदाहरण के लिए (राजा शत्रूशाल 1631–1638 ई.) जो बून्दी महल की चित्र शाला का भित्ति चित्र है। चित्र में अपने समय के एक पूरे गाव की बसावट का परिदृश्य प्रस्तुत है? जहाँ मकानों के चित्रांकन में इन्हे सामान्य जन–जीवन के लिए आवासीय बताया गया है वहाँ निवासियों के रहन–सहन को भी उसी स्तर पर चिश्रित किया गया है। पानी भरती महिलाएँ प्रदर्शित है तो ज्ञानोप्रदेश लेती स्त्रियों भी बताई गयी है। इस चित्र में बने मकानों की बाहरी दीवारों पर बने चित्र भी गाँव की शोभा बढ़ा रहे है। यहाँ चित्रित मकान साधारण दूमजिला कवेलूपोश है।

इन चित्रों में कलाकार ने बून्दी शहर के प्रमुख दृश्यों को प्रस्तुत करने का सफल प्रयास किया है। इसके पृष्ठ भाग में आकाश अंकित किया गया है। जिसमें बून्दी शैली के अनुरूप बादलों को मंडराते दिखाया गया है। इस चित्र में महत्वपूर्ण प्रस्तुति जन जीवन की हुई है। महल के परकोटे के भीतर ही पूरे एक बाजार का दृश्य आमन्त्रित किया गया है। जहाँ नगर निवासी आ–जा रहे है। बाजार छोटा नही पूरी बाईस दूकानें विद्यमान है। यहाँ व्यापार करती स्त्रिया भी है तो फूल. गहने इश्र, कपड़े, मिठाई आदि की दूकाने है। इसी की पृष्ठभूमि में अग्र भाग में एक सरोवर अंकित किया है जिसमें बून्दी शैली की पहचान सरोवर व पृष्ठभूमि से हरियाली को चित्रित किया है।

यहाँ बाजार में सभी दूकानों का स्थापत्य बूंदी शैली में चित्रित राजाप्रसादो के स्थापत्य से मिलता–जुलता है। इसके नारंगी रंग से बनी दूकान के ऊपर कंगूरे और निकला छज्जा अवश्य बनाया, लेकिन जिस कलात्मक दक्षता का ध्यान रखकर कलाकारों ने राजप्रसादों, हवेलियों की रचना की, उतनी दक्षता तथा आत्मीयता से आम लोगो तथा बाजार को नहीं बनाया गया। मोटी और विस्तृत सी रेखाओं से पहले रेखांकन कर फिर रंग भरे गये है। जैसे एक दूकान में फूल बेचती स्त्री आकृति में शारिरीक मुद्राएँ और आकृति में आकार सादृश्यता नही है। स्त्री न तो बैठी और न ही खड़ी हुई लग रही है मोटी बाह्य रेखा बनाकर उसमें रंगों की लापरवाही व जल्दबाजी में भरी गया जान पड़ता है।

दुकानों की पृष्ठ भूमि में हरा रंगा व दूकान के बाहर अर्थात अग्रभाग में भी हरा कलर ही प्रयुक्त हुआ है। इसी हरे कलर को पूरक विरोधी रंगो लाल इत्यादि को आकृतियों में प्रयुक्त किया गया जिसमें लाल व हरे रंग की सुसंगति से चित्र चित्र में दृश्य जगत का ऐन्द्रिय अनुभव सुखद प्रतीत होता है जिससे रंग योजना में एक प्रकार का नैसगिक सन्तुलन दृष्टि गोचर होता है सम्पुर्ण बाजार दृश्य चित्रकारों ने आत्मनिष्ठ होकर प्रस्थापित किया, जिससे लगता है कि यह मानवीय आकृतियों दरबारी न होकर जन सामान्य की है। इस चित्र में कहीं–कहीं मेवाड शैली के अंलकृत रूपाकारो की तरह यहाँ भी आकारों का पृष्ठभूमि पर प्रतीकात्मकर्ता पूर्ण पृष्ठभूमि पर अंलकृत कर दिया गया है चित्र में प्रभावित का उपयोग जाने अनजाने दृष्टिगोचर होता है। मुख्य आकृतियों को महत्वपूर्ण दर्शान के लिए बड़ा बनाया गया या फिर अधिक सुसज्जित किया गया हे।

कूल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि बून्दी शैली के कलाकारों ने अपनी कला में सामान्य जन जीवन को जिस आत्मीय सौन्दर्य के साथ उकेरा है।

हम यह देख पाते है कि राज्याश्रय विहीन स्वाधीन चिंतन में रहकर ही वहाँ के चितेरों ने जन सामान्य की रचनात्मक अभिव्यजनों की है।

संदर्भ

1. जी.एन.शर्मा राजस्थान का सांस्कृतिक इतिहास, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 2009, पृ. 194
2. अग्रवाल डॉ. आर.ए. कला विलास भारतीय कला का विवेचन, पृ. 127
3. अग्रवाल डॉ. आर.ए. कला विलास भारतीय कला का विवेचन, पृ. 127
4. चित्र चित्रशाला बून्दी महल, बून्दी
5. रीता प्रताप, भारतीय चित्र एवं मूर्ति कला का इतिहास, हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर